Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 2 | Issue 4 | (Oct – Dec 2025)

नाथ साहित्य का उद्भव, ऐतिहासिकता और वर्तमान

कृष्ण कुमार मुक्कड़ [1], डॉ. अखिलेश चास्टा [2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
[2] शोध निर्देशक, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
महाराणा प्रताप राजकीय पी.जी. महाविद्यालय चितौड़गढ़।

सारांश

नाथपंथ एक सामाजिक धार्मिक समन्वय संस्था का नाम है। नाथ पंथ के योगियो ने भारत के सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन में अद्वितीय भूमिका निभाई। नवीन जीवन मूल्यों के माध्यम से पूरे समाज को प्रभावित किया। नाथ पंथ के विषय पर विस्तृत चर्चा इस शोध ग्रंथ में हुई है। नाथपंथ भारत की मध्ययुगीन साधना के प्रकाश स्तंभ के रूप में दिखाई पड़ता है। जिसमें लोक कल्याण की लौह प्रज्वलित होती है। नाथ पंथ, गोरखनाथ के साहित्य और उनके योगतत्व के ईर्द-गिर्द घूमता है। पंथ के अनुसार गोरखनाथ सार्वदेशिक और सर्वकालिक है, जिसका प्रभाव संपूर्ण भारतीय समाज के साथ-साथ मध्य एशिया के विस्तृत भूभाग में व्याप्त है। इन भूभाग में नाथ पंथ की महंत-मठ परंपरा का भी अपना महत्व है। गुरु शिष्य परंपरा और योग दर्शन संपूर्ण विश्व की एक आध्यात्मिक चेतना की अमूल्य धरोहर है। इस पंथ के आविर्भाव के समय भारत में विघटन और विभाजनकारी प्रवृत्तियाँ विकसित हो चुकी थी। लेकिन नाथ पंथ ने उसे शनैः शनैः समाप्त करते हुए भारत को एकता के सूत्र में बाँधा। भारत में व्याप्त सामाजिक विकृतियों का खंडन करते हुए आम जनता को अपने योगमार्ग से जोड़ा। नवनाथ और चौरासी सिद्ध भारतीय जीवन पद्धति के वाहक है। गोरखनाथ का नाथ पंथ आगे चलकर संप्रदाय की संकीर्ण मनोवृतियों में बदल गया। अतः नाथपंथ ने योग के माध्यम से तन-मन और मनुष्य जन्म को साधने का एक अचूक निशाना दिया। नाथ साहित्य अपने समय के सामाजिक और धार्मिक अनाचारों के विरुद्ध एक मजबूत आवाज था, जिसने हठयोग को केंद्र में रखकर एक ऐसी साधना पद्धति प्रस्तुत की, जो परवर्ती हिंदी साहित्य की ज्ञानमार्गी शाखा के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हुई, जिसकी उपादेयता और प्रासंगिकता युग-युगांतर तक रहेगी।

मूल शब्दः नाथ साहित्य, नाथ पंथ, गोरखनाथ, मत्स्येंद्रनाथ, योग साधना, सिद्ध परंपरा, शैव दर्शन, गुरु–शिष्य परंपरा

मूल आलेख

नाथ संप्रदाय के पूर्व का काल संक्रान्ति काल था, इसे राजनीतिक उथल-उथल का काल कह सकते हैं। अनेक धार्मिक संगठन कार्य कर रहे थे लेकिन उनमें एकता का अभाव था। नाथ संप्रदाय बौद्धों की भक्ति साधना के विकृत रूप के प्रतिरोध स्वरूप उत्पन्न हुआ है। सिद्धों ने योग साधना के नाम पर पंचमकार (मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन) और वाम मार्ग के द्वारा जो अनाचार और भोग-विलास को अपनाया, नाथ संप्रदाय ने उसका कड़ा विरोध किया।

नाथ संप्रदाय के प्रर्वतन और प्रवर्तक एवं काल निर्धारण संबंधित विचारों पर हिंदी के आलोचकों में मतभेद हैं। इस संप्रदाय के संस्थापक गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथ शब्द का व्युत्पतिपरक शाब्दिक अर्थ स्वामी, ईश्वर, प्रभु, मालिक आदि के रूप में लिया है। छठी ईस्वी से बारहवीं शताब्दी तक का काल तांत्रिक साधनाओं का काल था। इन साधनों का इतना प्रभाव था कि “सभी सम्प्रदाय चाहे वे वैदिक हो या अवैदिक, वैष्णव हो अथवा शैव, बौद्ध हो या जैन सभी तंत्रचारित सृष्टितत्त्व, देवमण्डल, यंत्रविधान, मंत्र साधना, आचार विधान तथा हठ योगी साधनाओं को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रश्रय देने लगे थे।”[1]

नाथपंथ के उद्भव के बारे में हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि "नाथ-पंथ के आदि प्रवर्तक आदिनाथ या स्वयं शिव माने जाते हैं। मत्स्येंद्रनाथ इन्हीं के शिष्य थे। मत्स्येंद्रनाथ के कई शिष्य बहुत बड़े पंडित और सिद्ध हुए,जिनके प्रभाव से यह मार्ग सारे भारतवर्ष में प्रतिष्ठित हो गया। इन शिष्यों में सबसे प्रधान गोरक्षनाथ या गोरखनाथ थे। सुप्रसिद्ध तिब्बती ऐतिहासिक तारानाथ की गवाही पर म.म.पं. हरप्रसाद शास्त्री का कहना है कि गोरखनाथ पहले बौद्ध थे और बाद में शैव हो गए थे। इसीलिए तिब्बत के लामा लोग गोरखनाथ को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। गोरखनाथ ने ही योगमार्ग के इस अभिनव रूप को प्रतिष्ठित कराया। प्रसिद्ध महाराष्ट्र भक्त ज्ञाननाथ ने अपने को गोरखनाथ की शिष्यपरंपरा में माना है। उनके कथनानुसार यह परंपरा इस प्रकार है: आदिनाथ, मत्स्येंद्रनाथ, गोरक्षनाथ, गाहिनी (गैनी) नाथ, निवृत्तिनाथ, ज्ञाननाथ। ज्ञाननाथ तेरहवीं शताब्दी में वर्तमान थे। इस प्रकार गोरखनाथ ग्यारहवीं-बारहवीं शताब्दी में हुए होंगे।"[2]

नाथ पंथ का अन्य नाम हजारीप्रसाद द्विवेदी ने बारहपंथी कहा है। नाथ पंथ की बारह शाखाएँ हैं। जिसे बारह पंथी कहा जाता है। प्रत्येक शाखा का अपना महात्मा तथा अपना स्थान होता है। वह स्थान उनका तीर्थ तथा महात्मा को आदि प्रर्वतक मानकर उसकी पूजा करते है। बारहपंथी शाखाओं में छह शिव तथा छह गोरखनाथ से संबंधित हैं। ये बारह पंथी शाखाएँ सम्पूर्ण भारत वर्ष में फैली हुई है। "गोरखनाथ जी ने जो 12 शाखाएँ स्थापित की थी उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है- 1. सत्यनाथी 2. धर्मनाथी 3. बैराग 4. माननाधी 5. कन्हव 6. धमपंथ 7. रामपंच 8. आईपंथ 9. नटेश्वरी 10. पागलपंथ 11. कपिलानाथ 12. गंगा नाथ आदि प्रमुख है।"[3]

नाथ संप्रदाय की मूलभूत प्रवृत्तियाँ शिव-शक्ति अर्थात शैव संप्रदाय के सिद्धान्तों से परिशोधित हुई। गोरखनाथ के जन्मकाल, स्थान,जाति आदि के संबंध में नाथपंथियों की अनेक परम्पराएँ प्रचलित हैं। "गोरखनाथ के जन्मस्थान एवं उनकी जीवन परिस्थितियों के संबंध में कई तरह की दन्त कथाएँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इनका जन्म हिमालय क्षेत्र के आस-पास हुआ होगा। इनके पक्षधरों का तर्क है वहाँ बौद्ध मत के साथ-साथ शिव पूजा भी प्रचलित रही हैं। क्योकि पंजाब के उत्तरी हिमालय भाग में कनफटे योगी मिलते हैं। जो शिव का पूजन करते हैं।"[4] अत: भाषा और सांस्कृतिक प्रभाव का आधार पर राजस्थान एवं पंजाब को गोरखनाथ की कर्मभूमि स्वीकार कर सकते हैं। नाथ-साहित्य के निर्माता नव नाथ माने गये है, जो बौद्धों के वज्रयान शाखा का परिष्कृत रूप है।

नाथ संप्रदाय की धुरी गोरखनाथ है। जिनका हिंदी साहित्य के विकास में एक अद्वितीय और गहरा प्रभाव रहा है। नाथ संप्रदाय का उद्भव 9वीं और 10वीं शताब्दी के आसपास माना जाता है। नाथ पंथ आध्यात्मिक और योगनिष्ठ सम्प्रदाय है, जिसका उद्देश्य आत्मज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति है। नाथ सम्प्रदाय का उद्भव सिद्ध परंपरा और बौद्ध वज्रयान के साथ-साथ वैदिक एवं तांत्रिक परंपराओं के सम्मिश्रण से माना जाता है। गुरु मत्स्येंद्रनाथ ने योग की शिक्षा दी, जिसे शिष्य गोरखनाथ ने प्रचारित और व्यापक बनाया। मिश्र बन्धुओं ने गोरखनाथ को हिंदी गद्य का जनक बताया। उनकी भाषा तत्कालीन समाज के लिए सरल, सीधी और आम लोगों के लिए सुलभ थी। इस प्रयोग ने हिंदी को बोलचाल की भाषा से निकालकर साहित्यिक स्तर पर लाने में मदद की। उन्होंने खड़ी बोली को धार्मिक और दार्शनिक विचारों को व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम बनाया।

नाथ संप्रदाय की आधिकतम रचनाएँ संस्कृत, अवधी, ब्रज, भोजपुरी, खड़ी बोली में प्राप्त होती है, विशेषकर लोक भाषाओं के संवर्धन में नाथ पंथ के सिद्ध योगियों द्वारा वाचिक और लिखित लोक साहित्य में अप्रतिम योगदान है इसलिए ऋषि परम्परा में संस्कृत के आदिकवि वाल्मीकि का साहित्य में जो स्थान है। वही, हिंदी साहित्य में महायोगी गोरखनाथ का है। इसलिए हजारीप्रसाद ने गोरखनाथ को अपने युग का सबसे बड़ा धार्मिक नेता माना है। नाथ संप्रदाय ने तत्कालीन समाज की विद्रूपताओं को समझा तथा "नाथ सम्प्रदाय के योगियों ने मानव समाज में बिखरी हुई कुप्रथाओं, कुसंस्कारों एवं विकृत मान्यताओं को नष्ट करने का संकल्प किया। कालान्तर में इस प्रकार के छोटे-

छोटे सम्प्रदाय नाथ सम्प्रदाय में विलीन होते गये। इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय उन सभी साधकों का सम्प्रदाय है जो नाथ को परमपद स्वीकार कर उसकी प्राप्ति के लिए योग साधना करते हैं तथा इस सम्प्रदाय में दीक्षित होकर नामान्त में 'नाथ' उपाधि जोड़ते हैं।"[5] नाथों ने योग को भोग से अलग करके एक स्वस्थ, शुद्ध और नैतिक साधना (हठयोग) के रूप में स्थापित किया। उन्होंने नारी निंदा और गृहस्थ जीवन के प्रति अनादर का भाव रखकर वैराग्य पर जोर दिया।

नाथ संप्रदाय के रीती-रिवाजों के स्वरूप की बात करें तो नाथपंथ के योगी कानों का छेदन करते है और उनका मूल कार्य भिक्षाटन माना गया है। इनके मृत शरीर को पालकी में बिठा कर उसे उसी रूप में कब्र खोदकर कब्र में दफनाया जाता हैं, वह स्थान समाधि के रूप में जाना जाता है। नाथ संप्रदाय तत्कालीन समाज में व्याप्त ढोंग, कपट आदि का त्याग कर व्यावहारिक दर्शन की बात करता है। लेखक कमलकिशोर साँखला ने नाथों के रीति-रिवाजों पर बात करते हुए लिखा कि "नाथ साधु अपना साथनाकाल एकांत में व्यतीत करते हैं। इनका रहन-सहन संन्यासी की तरह होता हैं। ये लोग पहाड़ों, जंगलों में अपना डेरा रखते हैं तथा प्रकृति के जीव-जंतुओं के मध्य स्वयं निर्भय होकर रहते हैं। इनका खान-पान भी एक साधारण साधु की तरह होता है। नाथ साधुओं की जमात होती हैं। ये लोग विभिन्न अवसरों पर एकत्रित होकर भ्रमण हेतु जाते हैं। गुरु शिष्य परंपरागत अपने से बड़े का आदर करते हैं।"[6]

नाथ संप्रदाय वह अनादि धर्म है, जिसका परम लक्ष्य इन्द्रियों को अपने वश में कर मोक्ष प्राप्त करना है। मोक्ष प्राप्ति के लिए एक जटिल साधना को करना आवश्यक है। नाथों की हठयोग, आसन, प्राणायाम, षट्कर्म बंध, मुद्रा चक्र आदि प्रमुख साधना पद्धतियाँ है। साधना पद्धतियों को साधने के लिए गुरु के मार्गदर्शन को अनिवार्य माना गया है। गुरु शिष्य परंपरा भी इसमें अनोखापन लिए हुए है। इस सम्प्रदाय में मुख्यतः पाँच गुरु माने जाते हैं-

1. चोटी गुरु - चोटी गुरु उसे माना जाता है जो प्रथमतः शिष्य की चोटी काटता है। शिष्य का पंथ भी चोटी गुरु के नाम से चलता है और वही अपने गुरु का हकदार भी होता है।
2. चीरा गुरु - यह उस गुरु को कहते हैं जिसने औघड़ के कान में चीरा दिया हो।
3. विभूति गुरु - वह है जो औघड़ शरीर पर कुण्डल पहनने से पहले प्रथम विभूति लगाता है।
4. उपदेश गुरु - इसका तात्पर्य उस गुरु से है जो शिष्य को कान छेदने के समय उपदेश देता है।
5. शिक्षा गुरु - यह गुरु योगाभ्यास तथा अन्य प्रकार की शिक्षा देता है।"[7]

वर्तमान का नाथ सम्प्रदाय गुरु गोरखनाथ के वंश एवं संप्रदाय से फलीभूत एक नवीन पंथ है जिसमें पौराणिक समय से लेकर वर्तमान तक काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

नाथ पंथ का हिंदू और मुसलमानों पर समान रूप से प्रभाव पड़ा। मुसलमान आज भी राजा भर्तृहरी के भजन गाते दीख जाएँगे। "शैवों और शाक्तों के अतिरिक्त बौद्ध, जैन तथा वैष्णव योगमार्ग भी उनके सम्प्रदाय में आ मिले थे। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरू महिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण-साधना, वैराग्य मनः साधना, कुण्डलिनी जागरण, शून्य समाधि आदि का वर्णन किया है। इन विषयों में नीति और साधना की व्यापकता मिलती है। इसी साहित्य का विकास भक्तिकाल में ज्ञानमार्गी सन्त काव्य के रूप में हुआ। अतः नाथ साहित्य की साहित्यिकता को स्वीकार करना ही अधिक न्याय संगत है।"[8]

वर्तमान में भी नाथ सम्प्रदाय के कुछ लोग अपनी पौराणिक समय से चली आ रही रीति का बखूबी से पालन कर रहे है लेकिन उन लोगों के सामने भी वर्तमान सामाजिक परिवेश बाधा बना हुआ है। "भारत भूमि आदिकाल से ही सांस्कृतिक चेतना की अखण्ड परम्परा में पलती रही है। ऐतिहासिक उथल-पुथल एवं अनेकानेक धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक आघातों प्रत्याघातों के बावजूद किसी न किसी रूप में यह परम्परा अक्षत बनी रही। इस परम्परा की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी नाथ पंथी साधना है। नाथ पंथियों की हठयोग साधना से भारतीय आध्यत्मिक चिंतन

परिपुष्ट हुई। इस चिंतन की उत्स भूमि सिद्ध पंथी वामाचारों की प्रतिकिया में उभरी थी। जो परवर्ती साहित्य एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना को बहुत गहराई में प्रभावित करती रही है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की प्रत्येक धड़कन पर नाथ साहित्य की अमिट छाप परिलक्षित होती है।"[9]

नाथ पंथ के साहित्य का स्वरुप उपदेशात्मक या धार्मिक है जो लोक भावना के पक्ष को पूर्णरुपेण उकेरता है। लोक जीवन और उसकी प्रवृत्तियों का यह साहित्य हिंदी साहित्य में सार्थकता लिए हुए है। नेपाल में नाथ पंथ के वर्तमान प्रभाव का उल्लेख करती हुई अपने शोध ग्रन्थ में पद्मजा लिखती है "नेपाली समाज में नाथपंथ के प्रवर्तक गोरखनाथ का प्रभाव आज भी बना हुआ है। उल्लेखनीय है कि नेपाल की राजशाही व्यवस्था समाप्त होने और लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित होने के बाद भी वर्तमान में नेपाल की मुद्राओं (नोटो) पर गोरखनाथ जी द्वारा नेपाल नरेश पृथ्वीनारायण शाह को दिये गये कटार (तलवार) की अनुकृति तथा 'श्री भवानी' और 'श्री श्री श्री गोरखनाथ' नाम का अंकन प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि गोरखनाथ आज भी नेपाली जनता के बीच राष्ट्र गुरु के रुप में पूज्य हैं।"[10] लेखिका, नेपाल में स्थापित नाथ मठ-मंदिरों की सूची भी देती है और उसके सामाजिक प्रभाव का वर्णन भी किया है। नाथ सिद्ध विशेष रुप से मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ और सिद्ध रतननाथ की नेपाल में अत्यन्त प्रतिष्ठा है। नेपाल के सामाजिक-आध्यात्मिक जीवन पर इनका व्यापक प्रभाव है जिसकी प्रतिध्वनि नेपाल के राजनीतिक जीवन में भी सुनायी पड़ती है। स्पष्ट है कि नाथपंथ के योगियों ने नेपाल के हर गुफा-कन्दराओं, गाँवों और गलियों में भ्रमण करते हुए अपने द्वारा प्रतिपादित योग को नेपाली समाज के उत्थान में समर्पित किया। नेपाल के धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन में नाथपंथ के योगदर्शन और योग परंपरा का प्रभाव सर्वाधिक रहा है।

निष्कर्ष :

नाथ साहित्य और नाथ पंथ ने मध्यकालीन भारतीय समाज को धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर गहराई से प्रभावित किया। गोरखनाथ के नेतृत्व में विकसित नाथ परंपरा ने योग को केवल साधना तक सीमित न रखकर उसे जीवन-पद्धति के रुप में प्रतिष्ठित किया। हठयोग, आत्मसंयम और वैराग्य के माध्यम से नाथ योगियों ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुप्रथाओं और आडंबरपूर्ण साधनाओं का विरोध करते हुए मानव कल्याण को केंद्र में रखा। साहित्यिक दृष्टि से नाथ साहित्य ने लोकभाषाओं को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर हिंदी साहित्य के विकास को नई दिशा दी और आगे चलकर भक्तिकालीन ज्ञानमार्गी संत परंपरा को वैचारिक आधार प्रदान किया। सामाजिक समरसता, गुरु–शिष्य परंपरा और व्यावहारिक आध्यात्मिकता इसकी स्थायी उपलब्धियाँ हैं। निष्कर्षतः नाथ साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना की एक सशक्त धारा है, जिसकी प्रासंगिकता आध्यात्मिक, सामाजिक और साहित्यिक संदर्भों में आज भी बनी हुई है।

संदर्भ सूची

1. तेजकरण मीणा : नाथ संप्रदाय की साधना पद्धतियों का तात्विक अध्ययन : Remarking An Analisation (सं. राजीव मिश्रा), अंक-03, Issue-4, जुलाई, 2018, पृ. 82
2. हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, (दसवाँ सं.) पृ. 66
3. अंजना यादव : बारह पंथी : एक ऐतिहासिक विवेचन : Enternatioanl Juornal Of History, अंक- 2, जुलाई, 2020, पृ. 34-35
4. योगेन्द्र प्रताप सिंह (सं) : शेष संचयन, अंक 13, 15 जुलाई, 2022 पृ. 53
5. चन्द्रमौलि मणि त्रिपाठी : नाथ परम्परा में दीक्षा : नाथ पंथ और भक्ति आंदोलन, पृ. 72

6. कमल किशोर सांखला : राजस्थान के नाथ संप्रदाय का सांस्कृतिक इतिहास, महाराजा मानसिंह प्रकाश शोध केंद्र, मेहरानगढ़, जोधपुर, 2011 पृ. 144
7. चन्द्रमौलि मणि त्रिपाठी : नाथ परम्परा में दीक्षा : नाथ पंथ और भक्ति आंदोलन, नाथ पंथ और भक्ति आंदोलन, इतिहास संकल समिति, गोरक्ष प्रांत, 2010, पृ. 77
8. विवेक कुमार तिवारी : नाथ साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन एवं आदिकालीन नाथ संप्रदाय का उद्भव : शेष संचयन (सं.योगेन्द्र प्रताप सिंह), पृ. 54
9. वही, पृ. 54
10. पद्मजा सिंह : नाथ पंथ उद्भव और विकास : एक ऐतिहासिक विवेचन, प्राचीन इतिहास, पुरातत्व और संस्कृति विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश), 2020, पृ. 340